

► लघु उत्तरीय प्रश्न

Q1.) ऋग्वेद के काव्यशास्त्रीय एवं साहित्यिक महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

Ans) ऋग्वेद भारतीय साहित्य और संस्कृति का एक अनमोल खजाना है। इसके काव्यशास्त्रीय और साहित्यिक महत्त्व की निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:-

► काव्य शास्त्रीय महत्त्व :-

ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीन उपलब्ध काव्य संग्रह है। इसमें निहित छंद, मय, और भाषिक संरचनाएँ भारतीय काव्यशास्त्र के विकास की आधारशिला हैं।

ऋग्वेद में विभिन्न प्रकार के छंदों का प्रयोग मिलता है, जैसे - गायत्री, त्रिष्टुप, जगती, अनुष्टुप आदि।

इन छंदों के प्रयोग ने आगे चलकर संस्कृत काव्य के छंदशास्त्र को समृद्ध किया।

अद्यपि ऋग्वेद में विकसित अलंकारों का रूप नहीं मिलता फिर भी उपमा, रूपक आदि के प्रभाव देखे जा सकते हैं।

प्रकृति के सुन्दर और भव्य दृश्यों के वर्णन और में स्वाभाविक रूप से अलंकारों का प्रयोग हुआ है।

ऋग्वेद के स्तोत्रों में देवताओं की स्तुति, प्रकृति के वर्णन और मानवीय ~~समाज~~ मानवीय जीवन की अभिव्यक्ति में भक्ति, विमर्श, शान्त, आदि रसों के प्रारम्भिक अनुभव मिलते हैं।

ऋग्वेद के मंत्रों का मुख्य प्रयोजन देवताओं की स्तुति और यज्ञों का अनुष्ठान था। फिर भी, इनमें निहित कल्याण की भावना 'शिवितरङ्गतये' को काल के प्रयोजनों के प्रारम्भिक रूप में देखा जा सकता है।

साहित्यिक महत्व :-

ऋग्वेद की मान्यता का पहला साहित्यिक दस्तावेज माना जाता है। यह प्राचीन आर्यों के सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और दार्शनिक विचारों का दर्पण है।

ऋग्वेद में ऊषा, सूर्य, अग्नि, वरुण, इंद्र आदि देवताओं के माध्यम से प्रकृति के विभिन्न रूपों का अत्यंत सुंदर और काल्पात्मक चित्रण किया गया है।

इनके स्तुतियों में प्रेम, कल्याण, भय, जिज्ञासा आदि मानवीय भावनाओं की पहल और धार्मिक अभिव्यक्ति मिलती है।

इनमें अनेक ऐसे मिथक और कथाएँ हैं जो भारतीय साहित्य की परवर्ती रचनाओं (महाकाव्यों, पुराणों आदि) के लिए प्रेरणा स्रोत बनीं।

ऋग्वेद में प्रयुक्त संस्कृत भाषा भारतीय भाषाओं के विकास की जननी है।

इनकी भाषा और व्याकरण का अध्ययन भाषा-विज्ञान के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

ऋग्वेद भारतीय, धर्म, दर्शन और जीवन मूल्यों का आदि स्रोत है। इसके विचारों और आदर्शों ने भारतीय चिंतन और परम्परा को गहराई से प्रभावित किया है।

ऋग्वेद में प्रयुक्त भाषा अत्यंत समृद्ध, ओजपूर्ण, और काव्यात्मक है। इसमें मानव जीवन, प्रकृति, देवताओं और ब्रह्मांडीय शक्तियों के प्रति भावनात्मक अभिव्यक्ति मिलती है, जो साहित्यिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

इसके मंत्रों में अलंकारों का प्रयोग, कल्पना की उड़ान तथा भावों की गहराई देने को मिलती है।

इसी कारण से ऋग्वेद न केवल धार्मिक ग्रन्थ है, बल्कि संस्कृत काव्य और साहित्य की नींव भी है।

इसकी प्राचीनता, भाषिक समृद्धि, काव्यात्मक रसोदर्य और सांस्कृतिक महत्व इसे विश्व साहित्य में एक अद्वितीय स्थान प्रदान करते हैं।